International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 3, Issue 2, March-April, 2015, pp: (72-74), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

साम्प्रदायिकता और कबीर

सुरजीत सिंह

शोधकर्ता, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

आज के समाज की स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते है। फिर भी इनमें एकता पाई जाती है। भारत देश में मुख्य रूप से धर्म, चरित्र तथा अहिंसा को मानने वाले लोग रहते है। जिनमें मुख्य रूप से महात्मा गाँधी, **महावीर** स्वामी, महात्मा बुद्ध जैसे महान् पुरुषों ने जन्म लिया तथा राम और कृष्ण जैसे चरित नायक पैदा हुए। लेकिन इनके बावजूद भी भारत देश निरन्तर सामाजिक, साम्प्रदायिक समस्याओं से ग्रसित रहा तथा इनसे देश का वातावरण विषावत बना रहा।

''15वीं शताब्दी में, संतकाल के प्रारंभ में सारा भारतीय समाज क्षुब्ध था। बहुत से लोग इस समस्या का समाधान खोजने में **व्यस्त** थे और सभी लोग अपनी–अपनी तरह से इस समाज में फैली हुई साम्प्रदायिकता को संभालने का प्रयन्त कर रहे थे।''[1]

इस अराजकता का मुख्य कारण इस्लाम जैसे सम्प्रदाय का आगमन था। समाज में चारों तरफ उथल–पुथल थी। इसी वातवारण में कबीर का जन्म (1398 ई०) हुआ। समाज में फैले भेदभाव को देखकर कबीर बड़े क्षुब्ध हुए। चारों तरफ हिन्दु मुस्लिम जातीय भेदभाव व्याप्त था तथा एक–दूसरे के प्रति अति अविश्वास, असुरक्षा की भावना थी, कबीर ने इसके प्रति अपनी आवाज उठाने का संकल्प लिया।

''साम्प्रदायिक भेदभाव को समाप्त करने और जनता में फैली हुई नकारात्मक सोच को मिटाने तथा लोगों में खुशहाली लाने में संत कबीर अपने समय के एक मजबूत स्तंभ के रूप में समाज में प्रकट हुए। वे मूलतः अध्यात्मिक थे और वे कवि बाद में तथा समाज सुधारक पहले थे। इसी कारण संसार और सांसारिक के संबंध में उन्होंने जो कुछ भी कहा उनमें भी मुख्य रूप से अध्यात्मिकता का विशेष रूप से मुखर है।''[2]

इनके काजी मुल्ला पीर पैगम्बर रोजा पछिम निवाज।
इनमें पूरब दिसा देव दिज पूजा ग्यारिसि गंगादिवज।।
कहै कबीर दास फकीरा अपनी राह चलि आई।
हिन्दु तुरक का करता एकै ता गति लखि न जाई।।[3]

कबीर काल में हिन्दु मुस्लिम दोनों जातियाँ बराबर संघर्षरत रही और आचार–व्यवहार में भेदभाव और भिन्नता रहने के कारण साम्प्रदायिक कटुता दोनों में बराबर बनी रही। कबीर जनता में फैली हुई इसी कटुता को मिटाकर भाईचारे की भावना का प्रचार करना चाहते थे तथा लोगों की सोच को बदलना चाहते थे। उन्होंने जोरदार शब्दों में यह घोषणा की कि राम और रहीम दोनों एक ही है दोनों में कोई भी अन्तर नहीं है।

---

[1] कबीर ग्रन्थावली, पृ० 91
[2] साम्प्रदायिकता और कबीर, श्याम नारायण तिवारी, पृ० 183
[3] कबीर ग्रन्थावली, पृ० 90, पद 66

''कबीर ने अल्लाह और राम दोनों को एक मानकर उनकी वंदना की है और कहा है कि राम और रहीम में कोई अन्तर नहीं है। उनके इन विचारों से यह सिद्ध होता है कि उन्होंने अध्यात्म के उस चरम शिखर की अनुभूति कर ली जहाँ पर सभी भिन्नता–अभिन्नता, विरोध–अविरोध तथा समग्र दैत–अद्वैत में प्रतिष्ठित हो जाते हैं।''[4]

कबीर ने अल्लाह और राम की इस अद्वैत, अभेद और अभिन्न भूमिका की अनुमति के माध्यम से उन्होंने हिन्दु–मुस्लमान दोनों को गलत मार्ग पर चलने के लिए वर्जित किया।

''कभी पुचकारा नहीं, फटकार बताई।

ना जाने तेरा साहब कैसा है,

मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है

पंडित हाय के आसन मारे, लम्बी माला जपता है,

अन्तर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है।''[5]

हिन्दु मुस्लिम दोनों का विश्वास भगवान में था। कबीर ने इसी विश्वास के बल पर दोनों धर्मो को एक करने का प्रयत्न किया और भाईचारे की भावना उत्पन्न करने की चेष्टा की।

''दुई जगदीश कहां ते आये,

कहु कोने भरमाया

अल्ला, राम, करीम, केसब,

हरि, हजरत नाम घराया।''[6]

उन्होंने कहा है कि परमात्मा एक है, किसने यह कहकर जनता को भ्रमित किया कि परमात्मा अनेक है। परमात्मा के नाम अनेक है।

''विगत विगत के नाम घरायो, यह माटी के भाड़े,

कह 'कबीर' वे दोनों भूले, राम कि कि बहू न पाया।''[7]

सिर्फ नाम का भेद है वस्तुतः परमात्मा एक है और सभी एक ही प्रकार की माटी से सब जीवों की रचना हुई है। कबीर का कहना है कि हिन्दु–मुसलमान भ्रम है इसी कारण वे ध्येय तक नहीं पहुँच पाते, आपस में ही उलझ कर रह जाते है।

''वही महादेव वही मुहम्मद, बह्मा, आदम कहिये,

कोई हिन्दु कोई तुरुक कहावै, एक जमी पर रहिये।''[8]

कबीर कहते हैं कि परमात्मा एक है नाम उनके भिन्न–भिन्न है, इसी तरह सभी मानव एक ही जमीन पर रहते है। इसमें कोई हिन्दु, कोई तुरुक कहलाता है। लेकिन वस्तुतः सब व्यक्तियों में एक ही खून तथा एक ही हाड़ है।

''सबद सरूपी जिव–पिव बुझो,

छोड़ो भय की टेक।

कहै कबीर और नहिं दूज

जुग–जुग हम तुम एक।''[9]

---

[4] कबीर का रामभक्ति काव्य, संपादक भागवत प्रसाद मिश्र, पृ० 68
[5] वही
[6] कबीर ग्रन्थावली, सम्पदक श्याम सुन्दरदास, पृ० 72
[7] कबीर वचनावली, साखी 48
[8] कबीर वचनावली, साखी 68
[9] ध्वन्यालोक, पृ० 19

कबीर शब्द–साधना पर जोर दे रहे है। इनका कथन है – तुम श्रम तज कर शब्द साधना करो और अमृत रस का पान करो, हम तुम में कोई भी भेद नहीं है, हम दोनों उसी एक पिता की संतान है। इसी अर्थ में कबीरदास हिन्दु और मुसलमानों के ऐक्य विधायक है।

''हिन्दु, तुरूक की एक राह है सदगुरू इन्हे बताई।
कहै 'कबीर' सुनो हे संतो, राम न कहेउ खोदाई।।''[10]

कबीर कहते है कि हिन्दु और मुसलमान दोनों अलग–अलग अपने–अपने रीति –रिवाज के अनुसार चलते है लेकिन वस्तुतः दोनों का रास्ता एक ही है। यह ज्ञान गुरू की देन है। परमात्मा ने कहीं भी अत्याचार का मार्ग अपनाने का निर्देश नहीं दिया है।

''एकै पवन, एक ही पानी, एक जोती संसार।
एक ही खाक घडे, सब भाडे, एक ही सिरजन हार।''[11]

कबीर कहते है कि संसार में एक ही प्रकार की ज्योति, हवा और पानी का विस्तार है, इसमें कहीं भेदभाव नहीं है फिर यह आपसी भेदभाव क्यों ?

''अपने मनहि विचार के देखें, और दूसरा नाही।
एकै तुचा, रूधिर पुनि एकै, विप्र, सुद्र के माही।''[12]

कबीर का कहना है कि अपने मन में स्वयं विचार कर देखो कि एक ही प्रकार का मांस, रक्त प्रत्येक प्राणी में प्रवाहित हो रहा है। ब्राह्मण शूद्र सबमें एक समान धर्म, हड्डी है, फिर यह ऊंच–नीच, धूत–अधूत का भेदभाव क्यों ?

''जोगी गोरख करै, हिन्दु राम–राम उच्यारे,
मुस्लमान कहै एक खुदाई,
कबीर का स्वामी छति–छति रहयो रामाई।''[13]

योगी गोरख को पुकारता है हिन्दु राम–राम का उच्चारण करता है। मुस्लमान खुदा को याद करता है। कबीर का कथन है कि इन सब बातों से अलग भगवान घट– घट में प्रत्येक जगह व्याप्त है और वस्तुतः यही सब भिन्न–भिन्न मतावलम्बी लोगों के भगवान है, लेकिन भ्रम के कारण लोगों ने अलग–अलग नाम रखकर भेद खड़ा कर दिया है।

संत कबीर दास ने लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना को दूर करने का प्रयास किया है और हिन्दु और मुस्लमानों दोनों धर्मों के लोगों में एक साथ भाइचारे से रहने का प्रचार किया है।

[10] कबीर वचनावली : साखी 53
[11] कबीर वचनावली : साखी 37
[12] कबीर वचनावली : साखी 49
[13] संत काव्य, पृ० 239